भाग–3

योजनाएँ

3.1 कार्य आयोजनाओं का क्रियान्वयन

विभाग में प्रत्येक वनमण्डल के 10 वर्षो की कार्य आयोजना तैयार कर वनों का प्रबंधन किया जाता है। योजना के माध्यम से कम घनत्व वाले वन क्षेत्रों में वनीकरण भी किया जाता है, साथ ही बिगडे वनों के सुधार गतिविधियॉ एवं सघन वनों में पुनरूत्पादन हेतु सहायक वन वर्धनिक कार्य, वन सीमांकन एवं अग्नि सुरक्षा कार्य कराये जाते है। जहां आवश्यक है वहां राशि की उपलब्धता अनुसार भूमि एवं जल संरक्षण किया जाता है। क्षेत्र की तकनीकी उपयुक्तता एवं आवश्यकतानुसार चारागाह एवं जलाऊ रोपण भी किया जाता है। इस हेतु कार्य आयोजनाओं का क्रियान्वयन एवं वन विकास उपकर निधि से व्यय योजना के अन्तर्गत बजट में प्रावधान कराया जाता है।

कार्य आयोजनाओं के क्रियान्वयन अन्तर्गत विगत वर्षो में कराये गये कार्यों की भौतिक एवं आर्थिक उपलब्धियों की जानकारी निम्नानुसार है:–

तालिका क्रमांक 3.1
कार्यों वृत्त समूहवार कार्यों की भौतिक एवं आर्थिक उपलब्धि

(क्षेत्रफल हे0 में /राशि लाख रु0 में)

वर्ष	कार्य आयोजनाओं के कार्यवृत्त	लक्ष्य		उपलब्धि	
		भौतिक	आर्थिक	भौतिक	आर्थिक
2012-2013	संरक्षण समूह	19679	24967.98	19679	24954.33
	पुनरूत्पादन समूह	179946		179946	
	पुनर्स्थापना समूह	183742		183742	
2013-2014	संरक्षण समूह	18284	39424.88	18284	39367.74
	पुनरूत्पादन समूह	159806		159806	
	पुनर्स्थापना समूह	166838		166838	
2014-2015	संरक्षण समूह	18284	59178.19	18173	53905.62
	पुनरूत्पादन समूह	161056		156109	
	पुनर्स्थापना समूह	181936		175760	
2015-2016	संरक्षण समूह	16000	45550.00	13296	28017.54
	पुनर्स्थापना समूह	160000		157065	
	अतिव्यापी समूह	72923		72923	
2016-2017	संरक्षण समूह	18016	54708.60	18016	49763.49
	पुनरूत्पादन समूह	131739		130739	
	पुनर्स्थापना समूह	158966		151861	
2017-2018	संरक्षण समूह	5870	48707.03	4020	30316.53*
	पुनरूत्पादन समूह	171789		98657	
	पुनर्स्थापना समूह	93517		75250	

*जनवरी 2018 की स्थिति में

विगत छै वर्षों में योजनान्तर्गत किये गये रोपण कार्य का विवरण **तालिका क्रमांक 3.2** में दर्शित है।

तालिका क्रमांक 3.2
योजनान्तर्गत वर्षवार रोपण कार्य

रोपण वर्ष	क्षेत्र हेक्टेयर में
2012-2013	18919.48
2013-2014	25642.05
2014-2015	56930.49
2015-2016	96576.52
2016-2017	99196.52
2017-2018	125749.82

नर्मदा जलग्रहण क्षेत्र में एक दिवसीय वृक्षारोपण

मध्यप्रदेश की जीवन रेखा नर्मदा नदी के चिरन्तन प्रवाह के लिये "**नमामि देवी नर्मदे" नर्मदा सेवा यात्रा** के अन्तर्गत एक अभियान चलाकर दिनांक 02 जुलाई 2017 को नर्मदा नदी के जलग्रहण क्षेत्र में सभी विभागों द्वारा 708.63 लाख पौधे रोपित किये गये, जिनमें से केवल वन विभाग एवं वन विकास निगम द्वारा 333.72 लाख पौधे रोपित किये गये । वन विभाग एवं वन विकास निगम द्वारा रोपित इन 333.72 लाख पौधों में से अक्टूबर 2017 की स्थिति में 91 प्रतिशत पौधे जीवित पाये गये।

ऊर्जा वन

प्रदेश के वनांचल एवं ग्रामीण क्षेत्रों में निवासरत ग्रामीण समुदाय, जो ज्यादातर ईंधन की आपूर्ति हेतु जलाऊ लकड़ी पर निर्भर हैं, की जलाऊ आपूर्ति हेतु गांव के निकट स्थित बिगडे वनों एवं सामुदायिक भूमि पर पॉच–पॉच हैक्टेयर क्षेत्र में बीज बुवाई कर वर्ष 2017 –18 में विभागीय बजट राशि से 315 हेक्टेयर एवं राज्य लघुवनोपज संघ से प्राप्त राशि से 5620 हेक्टेयर क्षेत्र में ऊर्जा वन विकसित किया जा रहा है।

3.2 वन अधोसंरचना का सुदृढ़ीकरण

इस योजना के अंतर्गत मुख्यतः वन विभाग के कार्यालय भवन, वन कर्मचारियो के आवास, सामूहिक गश्ती दल के लिये चौकी, चौकी पर रहने वाले कर्मचारियों के परिवारों को आवास हेतु लाईन क्वॉटर तथा नयी सड़कों एवं पुल, पुलिया का निर्माण कराया जाता है। परिवर्तित स्वरूप में इस योजना से वन प्रबंध हेतु अन्य अधोसंरचना विकास जैसे, संचार टॉवर, सौर ऊर्जा संयंत्र आदि भी स्थापित किये जाते है। विभिन्न वर्षो में प्राप्त आवंटन एवं उसके विरूद्ध हुये व्यय का विवरण **तालिका क्रमांक 3.3** में दर्शित है।

तालिका क्रमांक 3.3
वर्षवार विकसित वन अधोसंरचना

(राशि लाख रु0 में)

वर्ष	लक्ष्य		उपलब्धि	
	भौतिक	आर्थिक	भौतिक	आर्थिक
2012-13	141 आंशिक भवन पूर्ण करना तथा 592 भवन, 16 लाईन क्वॉटर	5000.00	141 आंशिक भवन पूर्ण तथा 592 भवन, 16 लाईन क्वॉटर	4998.64
2013-14	961 भवन निर्माण कार्य	7700.00	पूर्ण	7679.38
2014-15	693 भवन निर्माण कार्य	8000.00	303 भवन पूर्ण एवं 390 आंशिक भवन पूर्ण	5487.68
2015-16	433 भवन निर्माण कार्य	6000.00	390 भवन 2014–15 के एवं 433 भवन 2015–16	4653.06
2016-17	298 भवन निर्माण कार्य	5025.00	433 अपूर्ण भवन 2015–16 पूर्ण एवं 298 भवन 2016–17 के निर्माणाधीन	3496.43
2017-18	270 भवन निर्माण कार्य	5019.31	298 अपूर्ण भवन 2016–17 पूर्ण एवं 270 भवन 2017–18 के निर्माणाधीन	3005.54 Upto 22 Jan. 18

3.3 विदेशी सहायता प्राप्त योजनाऍ /परियोजनाऍ

4. इको सिस्टम सेवा सुधार पुनर्वास परियोजना (ESIP) : विश्व बैंक सहायता से वित्त पोषित यह परियोजना दिनांक 16.08.2017 को स्वीकृत की गई है। इसका मुख्य उद्देश्य पारिस्थितिक तंत्र/पर्यावरण सेवाओं को बढ़ावा, भू–जल संरक्षण हेतु संधारण क्षमता को मजबूत करना एवं कार्बन भण्डार को बढ़ाना है। यह परियोजना केवल मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्य में पाइलट के रूप में क्रियान्वित की जाना है।

पायलट योजना के परिणामों के आधार पर योजना को पूरे देश में लागू किया जावेगा। इस पायलट परियोजना से संबधित मुख्य विवरण निम्नानुसार है–

4 (अ) योजना के अन्तर्गत प्रदेश को रू. 49.27 करोड़ की राशि अनुदान के रूप में प्राप्त होगी। यह योजना 16.08.2017 से 31.07.2022 तक संचालित होगी। इस योजना का क्रियान्वयन भारत सरकार पर्यावरण, वन, एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा जारी दिशा निर्देशानुसार विश्व बैंक के समन्वय से किया जाना है।

इस योजना के क्रियान्वयन में प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहायता से संस्थागत क्षमता में वृद्धि, वनों की गुणवत्ता में सुधार, वनों पर निर्भर समुदायों की आजीविका में सुधार, निजी एवं सामुदायिक भूमियों के भू–क्षरण में कमी लाना तथा वन–प्रबंधन, भू–प्रबंधन एवं भू उपयोग के क्षेत्र में नवीन तकनीक का समावेश होगा।

4(ब) परियोजना के घटक व वित्तीय व्यवस्था

1. Strengthening capacity and skills – 4.70Cr.
2. Improving forest quality and productivity – 33.55 Cr.
3. Developing community based models for NTFP – 8.25 Cr
4. Project Management – 2.77cr.

मध्य प्रदेश में यह परियोजना 8 लैंड स्केपों के निम्नानुसार वनमंडलों में क्रियान्वित की जानी है। विवरण **तालिका क्रमांक–3.4** में दर्शित है।

तालिका क्रमांक–3.4
ईको सिस्टम सेवा सुधार परियोजना में सम्मिलित क्षेत्र

क्रमांक	लैण्डस्केप का नाम	जिले का नाम	वनमण्डल	मिलि वाटर शेडों की संख्या	क्षेत्रफल (हे.मे.)
1	Kymore Plateau	Satna	Satna	4	33343.09
2	Northern Hills Plains	Umaria	Umaria	4	31919.78
		Balaghat	S. Balaghat	12	74703.37
3	Satpuda Narmada	Hoshangabad	Hoshangabad	5	33355.73
		Seoni	South Seoni	11	75028.4
		Betul	North Betul	4	27860.36
		Betul	W. Betul	8	29083.2
4	Vindhya Plateau	Raisen	Raisen	10	51000.26
		Raisen	Obedullaganj	10	51350.07
		Sehore	Sehore	5	27224.82
5	Malwa Plateau	Dhar	Dhar	3	10794.95
6	Nimar Jhabua Hills	Indore	Jhabua	3	20596.94
		Badwani	Badwani	3	18218.11
		Khandwa	Sendhwa	2	11708.77
7	Bundelkhand	Sagar	South Sagar	13	71378.77
		Panna	S. Panna	9	68068.78
8	Gird	Gwalior	Sheopur	8	50343.13
		Shivpuri	Shivpuri	8	49501
Total				**122**	**735479.53**

भाग–चार

4.1 पुरस्कार :–

पुरस्कार वितरण संबंधी कार्यवाही –

1. शहीद अमृता देवी विश्नोई पुरस्कार – प्रतिवर्ष वन रक्षा एवं वन संवर्धन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली संस्थाओं और व्यक्तियों के लिये शहीद अमृता देवी विश्नोई पुरस्कार दियेजाते हैं। ये पुरस्कार कुल पांच वर्गों में पुरस्कार दिये जा रहे हैं। वन रक्षा एवं वन संवर्द्धन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली संस्था को एक लाख रूपये नगद एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है। वन रक्षा एवं संवर्धन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्ति (शासकीय एवं अशासकीय) को पचास–पचास हजार रूपये नगद तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है। इसी प्रकार वन्यप्राणियों की रक्षा में अदम्य साहस व सूझबूझ का प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति (शासकीय एवं अशासकीय) को पचास–पचास हजार रूपये नगद एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

वर्ष	वनरक्षा एवं वन संवर्धन के क्षेत्र में उत्कृष्ठ कार्य करने वाली संस्था	वन रक्षा एवं वन संवर्धन के क्षेत्र में उत्कृष्ठ कार्य करने वाले व्यक्ति	वन्य प्राणियों की रक्षा में अदम्य साहस एवं सूझबूझ का प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति
2009	01	अशासकीय –01 शासकीय –01	अशासकीय –01 शासकीय – 01
2010	01	शासकीय–01	अशासकीय –01 शासकीय – 01
2011	01	–	अशासकीय –01

2. बसामन मामा स्मृति वन्य प्राणी संरक्षण पुरस्कार – वन एवं वन्य प्राणी संरक्षण हेतु निम्न दो श्रेणियों के पुरस्कार दिये जाते है।

- **विन्ध्य क्षेत्र हेतु पुरस्कार** – यह पुरस्कार शासकीय तथा अशासकीय व्यक्तियों द्वारा वनों एवं वन्यप्राणियों संरक्षण एवं वन संवर्धन के लिये प्रदर्शित की गई शूरवीरता, अदम्य साहस, उत्कृष्ट कार्य एवं उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया जाता है। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्क्रार क्रमशः रू 2.00 लाख, 1.00 लाख तथा 50 हजार दिया जाता है। यह पुरस्कार मरणोपरांत भी दिया जा सकता है।

- **राज्य स्तरीय पुरस्कार** – निजी भूमि पर उत्कृष्ट वृक्षारोपण के लिये यह पुरस्कार दो श्रेणियों में दिया जाता है। 5 हेक्टेयर से अधिक तथा 5 हेक्टेयर से कम भूमि पर, 5 वर्ष से अधिक उम्र के उत्कृष्ट वृक्षारोपण हेतु। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार क्रमशः रू. 2.00 लाख 1.00 लाख तथा 50 हजार दिया जाता है।

3. वन्यप्राणी पुरस्कार :– वन्यप्राणी संरक्षण में उत्कृष्ट योगदान के लिये कर्मचारियों एवं अधिकारियों को प्रोत्साहित करने हेतु राज्य शासन द्वारा वर्ष 2008 में वन्यप्राणी संरक्षण पुरस्कार संस्थापित किये गये हैं। इस पुरस्कार के अंतर्गत उप वनसंरक्षक/ सहायक वन संरक्षक स्तर के

लिये 01, वनक्षेत्रपाल स्तर के लिये 01 तथा उप–वनक्षेत्रपाल वनपाल/ वनरक्षक स्तर के लिये 04 पुरूस्कारो का प्रावधान किया गया है। प्रत्येक पुरूस्कार की राशि 50 हजार रूपये हैं। पात्र अधिकारियों एवं कर्मचारियों के चयन हेतु शासन द्वारा प्रमुख सचिव, वन की अध्यक्षता में 12 सदस्यीय समिति का गठित है जिसमें 06 अधिकारी और 06 अशासकीय सदस्य हैं। वन्यप्राणियों की सुरक्षा, अनुश्रवण एवं रेस्क्यू ऑपरेशन में महत्वपूर्ण योगदान के लिए तीन वर्गों में कुल 38 लोगों को वर्ष 2015 में पुरस्कृत किया गया।

4. प्रदेश स्तरीय वनसंरक्षण में उत्कृष्ट उपलब्धी हेतु वनरक्षकों को पुरस्कृत करने हेतु सतपुड़ा वन संरक्षण एवं विन्ध्य वन संरक्षण पुरस्कार योजना वर्ष 2016 से लागू की गई है। जिसमें प्रतिवर्ष प्रदेश स्तर पर दो वनरक्षकों को पृथक–पृथक सतपुड़ा वन संरक्षण (बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा, जबलपुर, होशंगाबाद, बैतूल, खण्डवा, इन्दौर एवं उज्जैन वृत्त हेतु) एवं विन्ध्य वन संरक्षण (भोपाल, सागर, छतरपुर, रीवा, शहडोल, शिवपुरी एवं ग्वालियर वृत्त हेतु) पुरस्कार के रूप में 25–25 हजार रूपये की राशि का पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

5. इसके अलावा स्वतन्त्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस तथा अन्य अवसरों पर वन संरक्षण, वनवर्धन एवं अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले अधिकारी/कर्मचारियों को पुरस्कृत किया जाता है।

विभागीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता 2017–18 पुरस्कार वितरण

गणतंत्र दिवस, 2018–पुरस्कार वितरण

4.2 अभिनव योजना

दीनदयाल वनांचल सेवा

दीनदयाल वनांचल सेवा का शुभारंभ 20 अक्टूबर 2016 को मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान के कर–कमलों द्वारा किया गया है। यह अन्तर्विभागीय समन्वय का एक अनूठा उदाहरण है।

- वन सुरक्षा एवं विकास के साथ सुदूर वनांचलों में पदस्थ वन अधिकारियों/कर्मचारियों के सहयोग से वनवासियों के कल्याण एवं सेवा का यह एक अभिनव प्रयास है। मध्य प्रदेश के 94 हजार 689 वर्ग किलोमीटर वनक्षेत्र की सीमा से 5 किमी दूरी तक के दूरदराज क्षेत्रों में 15 हजार 228 वन समितियाँ कार्यरत हैं। स्थानीय लोगों का वनों की सुरक्षा एवं विकास में सहयोग प्राप्त करने की दृष्टि से बनाई गई इन समितियों के माध्यम से ग्रामीणों तक वन विभाग के कर्मचारियों का सतत् सम्पर्क बना रहता है। अतः इस योजना के तहत वनांचलों में जहां अन्य विभागों की पहुँच कम हैं, वहां शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण इत्यादि में वनविभाग के मैदानी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के द्वारा सेवाभाव से बेहतर सुविधायें उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है।

- स्वस्थ जन–स्वस्थ वन की अवधारणा पर यह योजना आधारित है। इस योजना के अन्तर्गत सुदूर वनांचलों में पदस्थ वनकर्मियों द्वारा लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, स्कूल शिक्षा विभाग एवं आदिम जाति कल्याण विभाग में प्रचलित विभिन्न कार्यक्रमों एवं विभागीय योजनाओं का लाभ वनवासियों तक पहुचानें में सहयोग किया जाना लक्षित है। आंगनवाड़ी केन्द्रों के भवनों का निर्माण एवं आवश्यकतानुसार शौचालयों के निर्माण एवं अन्य मरम्मत/उन्नयन के कार्य, नर्सरी/पौधा–रोपण/ वन–उपज/ ग्राम–उद्योग/कृषि कार्य इत्यादि के माध्यम से रोजगार सृजन हेतु कार्य योजना तैयार करना, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के माध्यम से प्रत्येक ग्राम में 05 इमली के पौधे रोपण की कार्य योजना तैयार करना, मूनगे, नींबू, इमली, सीताफल इत्यादि के उच्च उत्पादकता के बीज तैयार कर महिला एवं बाल विकास विभाग को उपलब्ध कराना, दूरस्थ एवं दुर्गम क्षेत्रों में उदिता योजना अन्तर्गत किशोरियों में माहवारी स्वच्छता तथा समुचित माहवारी प्रबंधन के संदेशों का प्रचार–प्रसार करना एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा संचालित इन्द्रधनुष मिशन के अन्तर्गत टीकाकरण अभियान में विभागीय अमला को आवश्यक सहयोग प्रदान करना दीनदयाल वनांचल सेवा योजना का अंग है।

- जमीनी स्तर पर इस योजना को बेहतर ढ़ंग से लागू करने के लिये लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के सहयोग से मास्टर ट्रेनर्स (आशा कार्यकर्ता) के माध्यम से अभी तक वनकर्मियों के कुल 274 प्रशिक्षण शिविर आयोजित कराये गये है, जिसमें 8342 वनकर्मी स्वास्थ्य सेवाओं पर प्रशिक्षित हुये हैं।

- इस कार्यक्रम के प्रचार–प्रसार हेतु प्रदेश के अन्तर्गत वन मेला, चित्रकूट ग्रामीण मेला, राज्य एवं जिला स्तरीय कार्यक्रमों में प्रदर्शनी लगाई गई।

उपलब्धियॉः–

- पायलेट प्रोजेक्ट की उपलब्धियॉ निम्नानुसार हैः–

क्र.	उपलब्धियों का विवरण	वनमंडल							
		डिण्डोरी		पूर्व मण्डला		पश्चिम मण्डला		बैतूल	
		28 जनवरी, 2017	21 मई 2017	26 मार्च, 2017	09 जुलाई, 2017	26 मार्च 2017	09 जुलाई 2017	05 मार्च 2017	28 मई 2017
1.	कुल स्वास्थ्य शिविर	7	7	4	4	5	5	10	10
2.	वनग्रामों की संख्या	86	86	26	26	33	33	78	58
3.	कुल पंजीकृत मरीजों की संख्या	2638	1566	1464	887	1638	942	3,984	2,859
4.	हाई रिस्क गर्भवती महिलाओं की संख्या	280	350	231	189	291	282	746	433
5.	गंभीर ऐनीमिया के प्रकरण	72	54	0	0	9	0	197	148
6.	वनग्रामों से शिविर में उपस्थित महिलाऐं	438	224	144		82		307	380
7.	कुल उपस्थित चिकित्सकों की संख्या	36	34	20	9	22	6	51	48

- पॉयलेट प्रोजेक्ट के अतिरिक्त बांधवगढ़ टाईगर रिजर्व के अंतर्गत ताला में दिनांक 18.06.2017 को सम्पन्न किये गये स्वास्थ्य शिविर की उपलब्धियाँ–

क्रमांक	विवरण	उपलब्धि
1.	शिविर में पंजीकृत महिलाएं/बच्चे	402
2.	मरीजों को बड़े अस्पताल में रेफरल किया गया।	03
3.	हीमोग्लोबिन के मरीजों की जाँच	114
4.	कुल उपस्थित चिकित्सकों की संख्या	05

- बैतूल, मण्डला, डिण्डोरी सहित प्रदेश के समस्त जिलों में 454 स्वास्थ्य शिविरों में माह जुलाई, 2017 तक कुल 52202 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उपचार किया गया। इन शिविरों के माध्यम से मातृ

मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर कम करने एवं जटिल बीमारियों से ग्रसित मरीजों को निकटतम अस्पताल पहुचाने, गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण कराने, महामारी जैसे गंभीर रोगों की सूचना देने, टीकाकरण, मलेरिया उन्मूलन, किशोरी बालिकाओं के स्वास्थ्य सुधार एवं कुपोषण दूर करने के प्रयास किये जा रहे है। इन शिविरों की मुख्य उपलब्धियाँ निम्नानुसार है–

अ. 7713 गर्भवती महिलाओं की जाँच।
ब. 3069 हाईरिस्क गर्भवती महिलाओं की जाँच।
स. 654 कुपोषित मरीजों की पहचान एवं जाँच।
द. 278 मरीजों को बड़े अस्पताल में रेफरल किया गया।
ई. 1568 हिमोग्लोबिन के मरीजों की जाँच।

- इंदौर वृत्त के चोरल परिक्षेत्र में 17 आंगनबाड़ियों के क्षेत्र में 80 बच्चों को गोद लिया गया व उपयुक्त पोषण हेतु ग्रोविट पाउडर एवं मालिश हेतु तेल वितरण किया गया तथा नियमित रूप से बच्चों को पोषण आहार लेने हेतु माताओं को प्रेरित किया गया, जिसके एक माह उपरान्त पुनः वज़न करने पर बच्चों के वज़न में 100 ग्राम से लेकर 400 ग्राम की वृद्धि देखी गई एवं एक बच्चा अतिकम वज़न से सामान्य वज़न की श्रेणी में आ गया।
- स्कूल एवं शिक्षा विभाग के अन्तर्गत विभिन्न वनमंडलों में रिसोर्स पर्सन का चयन किया गया है जो वनांचलों के स्कूलों एवं छात्रावासों में विभिन्न विषयों में छात्र–छात्राओं को अध्ययन कराने एवं वनों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में प्रयासरत हैं।
- वनांचलों में स्कूल शिक्षा एवं आदिम जाति कल्याण विभाग द्वारा संचालित शालाओं में वर्ष 2017 की वर्षा ऋतु में पौधा रोपण करने हेतु पौधे उपलब्ध कराये गये एवं स्कूली बच्चों को पौधों की देखभाल करने हेतु प्रेरित किया गया।

विकासखण्ड – अठनेर, बैतूल,

विकासखण्ड – बैतूल बाजार बैतूल,

विकासखण्ड – करंजिया, डिंडोरी

विकासखंड – बुढ़ार जिला शहड़ोल

विकास खण्ड – आमला, बैतूल

गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण, मण्डला

म0प्र0 जैवविविधता बोर्ड

➢ **बीज बचाओं, कृषि बचाओं सह बीज अपनाओ यात्रा** – प्रदेश की भूली–बिसरी कृषि की पारम्परिक किस्मों के बीजों के संरक्षण, संवर्धन हेतु मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा ''**बीज बचाओं, कृषि बचाओं सह बीज अपनाओं यात्रा**'' दो चरणों में 02 मई से 10 जून, 2017 तथा 19 जून से 06 जुलाई 2017 तक आयोजित की गयी, जिसका विवरण निम्नानुसार है :

सम्मिलित जिले	आयोजित चौपाल	यात्रा दिवस	प्राप्त बीज प्रजातियॉ	बीजों के कुल नमूने
40	56	56	166	2052

यात्रा के दौरान आयोजित रैली एवं चौपाल

➢ **मिट्टी की गेंद निर्माण एवं बीज रोपण कार्यक्रम** – मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा वर्षा ऋतु में एक अभिनव पहल ''प्रदेश के मौसमी फलों एवं जंगलीय प्रजातियों का बीज संग्रहण कर उनका संरक्षण'' प्रारंभ किया गया। इसके अंतर्गत मौसमी फलों एवं जंगलीय प्रजातियों के बीज एकत्रित कर मिट्टी की गेंद (Mudball) बनाकर बीज रोपण कार्यक्रम भोपाल के 12 स्थानों पर दिनांक 02.07.2017 एवं 09.07.2017 को किया गया। कार्यक्रम में लगभग 557 लोगों द्वारा भाग लिया गया एवं लगभग 5000 बीजों का रोपण किया गया।

मड़बाल निर्माण एवं बीज रोपण कार्यक्रम में सम्मिलित प्रतिभागी

➢ **माटी गणेश–बीज गणेश–सजीव गणेश** – पर्यावरण एवं जैवविविधता संरक्षण में नवाचार के दृष्टिकोण से भोपाल एवं प्रदेश के अन्य स्थानों पर जन जन द्वारा मिट्टी के गणेश बनाने एवं उसमें बीज रोपित करने का कार्य व्यापक स्तर पर किया गया। इस कार्यक्रम में 54 प्रशिक्षण संस्थानों/प्रशिक्षकों द्वारा 18 अगस्त से 25 अगस्त 2017 की अवधि में विभिन्न स्थानों पर 124 प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से 24724 प्रशिणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रशिक्षण की अवधि में 4557 बीज गणेश मूतियों का निर्माण किया गया।

''माटी गणेश–बीज गणेश–सजीव गणेश'' कार्यक्रम में सम्मिलित प्रतिभागी

4.3 महत्वपूर्ण सांख्यिकी

वनों का क्षेत्रफल

मध्य प्रदेश के वनों के क्षेत्रफल, घनत्व, प्रकार आदि से संबंधित महत्वपूर्ण आंकड़े **तालिका क्रमांक 4.1 से 4.4** में दर्शित है।

तालिका क्रमांक 4.1
देश की तुलना में मध्य प्रदेश के वन

(वर्ग कि.मी.)

	भौगोलिक क्षेत्र	वनक्षेत्र	प्रतिशत वनक्षेत्र
भारत	32,87,263	7,71,821	23.48
मध्य प्रदेश	3,08,245	94,689	30.72

(स्त्रोत–स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट 2015)

तालिका क्रमांक 4.2
प्रदेश के वनक्षेत्रों की वैधानिक स्थिति

(वर्ग कि.मी.)

वर्गीकरण	क्षेत्रफल	प्रतिशत
आरक्षित वन	61,886	65.36
संरक्षित वन	31,098	32.84
अन्य	1,705	1.80
योग	**94,689**	**100.00**

(स्त्रोत–स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट 2015)

भारतीय वन सर्वेक्षण (पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय) देहरादून द्वारा प्रकाशित प्रतिवेदन के आधार पर प्रदेश में विगत तीन अध्यायनों में परिलक्षित वनावरण की स्थिति की **तालिका क्रमांक 4.3** में दर्शित है।

तालिका क्रमांक 4.3

प्रदेश के वनों का घनत्व–वार क्षेत्रफल

(वर्ग कि.मी.)

वनों का प्रकार	**प्रतिवेदन वर्ष**		
	2011	**2013**	**2015**
अति सघन वन	6640	6632	6629
सामान्य सघन वन	34986	34921	34902
खुले वन	36074	35969	35931
योग	**77700**	**77522**	**77462**
(रिक्त क्षेत्र) *	16989	17167	17227

*रिक्त क्षेत्र– ऐसे वन जिनका घनत्व 0.1 से कम है। इसका उल्लेख स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट में नहीं है।

प्रदेश में वनों के प्रकार तथा क्षेत्रफल का विवरण **तालिका क्रमांक 4.4** में दर्शित है।

तालिका क्रमांक 4.4
प्रदेश के वनों के प्रकार और क्षेत्रफल

(वर्ग कि.मी.)

संरचना	क्षेत्रफल	प्रतिशत
सागौन	18,332	19.36
साल	3,932	4.15
मिश्रित एंव अन्य	55436	58.49
रिक्त (खुला क्षेत्र)	16989	18.00
योग	94,689	100.00

(बांस वनक्षेत्र 13059 वर्ग कि0मी0 अतिव्यापी क्षेत्र)

भारतीय वन सर्वेक्षण देहरादून से प्रकाशित प्रतिवेदन अनुसार जिलेवार वनावरण की स्थिति **परिशिष्ट क्रमांक 18** पर दी गई है।

भाग– पाँच

विभाग के प्रकाशन

(अ) त्रैमासिक पत्रिका ''म0प्र0 वनांचल संदेश'' के चतुर्थ संस्करण का प्रकाशन।

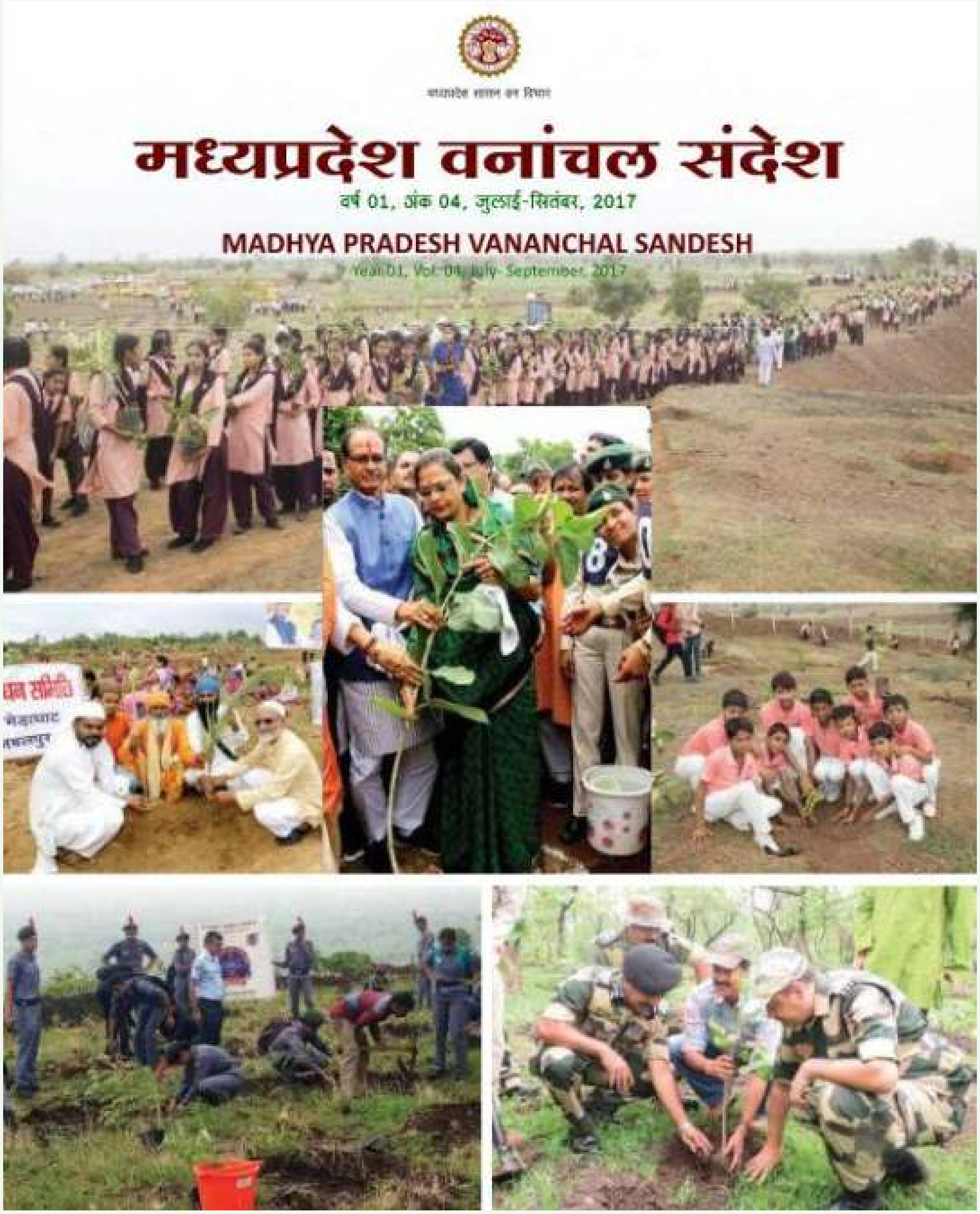

(ब) म0प्र0 जैवविविधता बोर्ड के द्वारा प्रकाशन

1. नर्मदा संरक्षण पर आधारित फिल्म श्री अमृत लाल वेगड़, पर्यावरण साहित्यकार के साक्षात्कार पर डाक्यूमेंट्री फिल्म,
2. प्रदेश की जैवविविधता पर आधारित डाक्यूमेंट्री फिल्म ''मध्यप्रदेश की जैवविविधता हमारी धरोहर'' बनाई गई,
3. जैवविविधता दिवस के अवसर पर जागरूकता हेतु – ''जंगल में आग, खेतों में आग, कहॉ है आप'' एवं संवहनीय पर्यटन पर आधारित ''चंबल सोन्स'' फिल्म बनाई गयी,
4. मध्यप्रदेश वानस्पतिक जैवविविधता रोपणी योजना – मानकीकरण व तकनीकी मार्गदर्शिका नामक पुस्तक का प्रकाशन किया गया है।

(स) राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा प्रकाशन

संस्थान द्वारा त्रैमासिक पत्रिकाओं ''वानिकी संदेश'' तथा 'वन–धन' का प्रकाशन किया जाता है। समय–समय पर अनुसंधान द्वारा विकसित तकनीकों के प्रचार–प्रसार हेतु पुस्तक, तकनीकी बुलेटिन, ब्रोशर एवं पेम्पलेट्स का प्रकाशन किया जाता है। संस्थान के नवीन प्रकाशन निम्नानुसार हैः–

- कैमरा ट्रैप मार्गदर्शिका
- अकाष्ठीय वनोपज प्रजातियों का अंतःस्थलीय, बाह्य स्थलीय संरक्षण, नवप्रवर्तन – वनवर्धन एवं विकास।
- अकाष्ठीय वनोपज सतत् विदोहन एवं प्रबंधन नियमावली।
- रोपणी मार्गदर्शिका
- मध्यप्रदेश के लिये कापीस से प्राप्त महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों की वृद्धि तालिका ।
- वन एवं औषधीय प्रजातियों की रोपणी एवं रोपण तकनीक मार्गदर्शिका
- वानिकी में माइक्रोक्लोनल प्रोपेगेशन तकनीक द्वारा वृक्ष एवं औषधीय प्रजातियों के क्लोनल पौधे तैयार करने की विधियॉं।
- सामुदायिक भागीदारी द्वारा अकाष्ठीय वनोपजों के मानचित्र एवं आंकलन विधि मार्गदर्शिका।
- म.प्र. के विभिन्न वनमण्डलों के सागौन तथा साल प्रजातियों के वृक्षों के आयतन एवं उपज तालिका।
- हरबेरियम तैयार करने तथा उसके प्रबंधन पर प्रशिक्षण पुस्तिका।
- म.प्र. के वनों में पायी जाने वाली महत्वपूर्ण दुर्लभ प्रजातियों की उपयुक्त रोपणी तकनीकी का विकास पर विस्तार पुस्तिका।
- खमेर शीर्ष सूखन रोग एवं प्रबंधन तकनीकी मार्गदर्शिका।